पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

शब्द
से संवेदना तक...
लेखन से
परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

'समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम'

(लेख प्रतियोगिता)

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

समाज
विकास
शिक्षा
पर्यावरण
युवा
मूल्य
राजनीति
महिला
संस्कृति
समाधान

समाज
साहित्य
संस्कृति
विकास
नई पीढ़ी
बेहतर कल

विचारों की
स्याही से
बदलता समाज...

रचनाकार :-
साधना छिरोल्या

आयोजक:-
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं। प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उतरदायी हैं। रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना हैं।

हिन्दी
से ही है
पहचान...

विचार...
संवाद...
समाज...
और एक बैहतर कल...

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका – साधना छिरोल्या

विषय- हिंदी ही क्यों न राष्ट्रभाषा बने;;

शीर्षक- हमारी हिंदी

हमारी हिंदी

आओ एक काम करने चलें,
हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने की,
अलख जगाने चलें।।

प्रत्येक मानव के जीवन में भाषा का अत्याधिक योगदान होता है। भाषा ही किसी देश को विकास की ओर ले जाती है,उन्नति के पायदान पर चढ़ाती है।राष्ट्र उसी भाषा के कारण संगठित और विकास की ओर अग्रसर होता है। एक भाषा ही उस देश को मान और सम्मान दिलाती है। विश्व पटल पर एक अहम स्थान दिलाने में उस देश की भाषा की अहम् भूमिका होती है। आज की सबसे बड़ी समस्या ;;;आजादी के इतने सालों बाद भी अपने ही देश में अपनी ही हिंदी राष्ट्रभाषा नहीं बन पाई यह हम सब का दुर्भाग्य ही है कि आज हिंदी को अपने ही देश में इतना कमतर समझा जाता है।

भारत ऋषि-मुनियों की भूमि है, पावन धरा है। हमारी प्राचीन पवित्र भाषा संस्कृत थी और इस संस्कृत से ही हिंदी का जन्म हुआ इसलिए हम सब हिंदी को संस्कृत की बड़ी बेटी कहते हैं। हमारे यहां हिंदी को हिंदी माँ का दर्जा दिया जाता है।इतिहास के पन्ने पलटे तो भारत को प्राचीन समय में विश्व गुरु कहा जाता था,जब पूरा विश्व अंधकार में डूबा हुआ था, उस समय भारत की सभ्यता और संस्कृति चरम सीमा पर थी;;;; उस समय भारत की प्राचीन अर्थव्यवस्था, सभ्यता, संस्कृति ,राजनीति,चिकित्सा पद्धति, लोगों का ज्ञान इतना समृद्ध था कि वह विश्व के किसी भी देश से सबसे अधिक था और इसमें हिंदी भाषा का ही एक अहम योगदान था। बिना हिंदी भाषा के तो यह कुछ संभव ही नहीं था।

हमारे भारत में शिक्षा और शिक्षण कार्य को बहुत ही पवित्र कार्य माना जाता है।
एक बार फिर इतिहास के पन्ने पलटा कर देखें तो प्राचीनतम योग वैदिक योग में तक्षशिला, मिथिला, भारत निकुंज, धारा तंजोर शिक्षण के मुख्य केंद्र थे। विश्वविद्यालय की संकल्पना का उदय भारत में ही हुआ ।उस समय प्राचीन भाषा हमारी संस्कृत;;और इसी संस्कृत से हिंदी का जन्म हुआ। पूरे भारत में प्राचीन समय में 13 बड़े विश्वविद्यालय थे। भारत की आन बान शान इसी हिंदी के कारण थी।

विश्व जगत में नाम भी प्राचीन समय से लेकर आज तक हिंदी के कारण ही है।आज से सैकड़ों साल पहले भारत में ऐसी शिक्षा के केंद्र थे;; जिनका स्वरूप आज के विश्वविद्यालयों जैसा ही था। और वही हिंदी आज तक मात्र राजभाषा तक सीमित रह गई

गणित शिक्षा, सैनिक शिक्षा ,ज्योतिष शास्त्र, भूगोल विज्ञान के साथ अन्य विषयों की शिक्षा देने में कोई भी देश बराबरी नहीं कर पाया। आर्यभट्ट भट्टाचार्य ने गणित के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। गणित की गिनती हमारी भारत की ही देन है आज दुनिया के दर्जनों विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाने लगी है।हिंदी संस्कृत से निकली और इसमें दर्जनों एशियाई भाषाओं का संगम होने से हिंदी का शब्द भंडार दुनिया के किसी भी भाषा से बहुत अधिक है।हिंदी भाषा के विदेश में भी विकास होने से कई विदेशी भी हमारे यहां पढ़ने आ रहे हैं ।भारत को योग और अध्यात्म का प्रमुख केंद्र माना जाता है । आज धर्म की शिक्षा पूरे विश्व में विख्यात है ।इसी धर्म दर्शन की शिक्षा के लिए भी विदेशी भारत की ओर अग्रसर हो रहे हैं।

संयुक्त राष्ट्र संघ महासभा की बैठक में हमारे पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेई ने विदेश मंत्री के रूप में पहली बार अपना भाषण हिंदी में देकर भारत का मान बढ़ाया और इससे दुनिया भर के विश्व पटल पर भारत को एक अहम स्थान मिला। माननीय मोदी जी, सुषमा स्वराज जी ने भी विदेशी सर जमीन पर हिंदी में भाषण दिया और इससे कहीं न कहीं भारत का मान सम्मान देश विदेश में भी बढ़ा।

आज भारत की तीन चौथाई जनसंख्या हिंदी बोलती, लिखती और पढ़ती है।हिंदी भाषा एक बहुत ही प्राचीन भाषा है, जो लगभग 1000 वर्ष पुरानी है। हिंदी से ही देश में पत्रकारिता को एक नई दिशा और दशा मिली, जिसका राष्ट्र के नवनिर्माण में एक अहम योगदान रहा है ।इसने भारत को विश्व में एक नई पहचान दिलाई और भविष्य में भी यही हिंदी भाषा हमें;;! हमारे राष्ट्र को विश्व में नई ऊंचाई तक ले जाएगी। आज हिंदी भाषा के कारण हमारा देश विदेश में भी मान सम्मान बढ़ रहा है। हमारे अनेक साहित्यकारों ने हिंदी भाषा को समृद्ध किया और उसके ही द्वारा हमारे नए साहित्यकारों को एक नई पहचान मिली। तो फिर हिंदी क्यों ना राष्ट्रभाषा बने;;;

हिंदी भाषा ने हमारे राष्ट्र को सामाजिक,आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक सभी रूप से समृद्ध किया। आज देश के साथ-साथ विदेश में भी हिंदी भाषी की संख्या बहुतायत रूप में देखने को मिल रही है।

हिंदी भाषा एक बहुत ही सरल और मीठी भाषा है, जो गांव को शहर से जोड़कर रखती है। हिंदी भाषा में एक अलग ही सोंधी खुशबू आती है। जो हमें अपनी माटी से जुड़ने का एहसास दिलाती है। आज हिंदी भाषा भारत की सभ्यता और संस्कृति की भी परिचायक है।हिंदी भाषा के कारण हमारे युवाओं को अनेक प्रकार के रोजगार के कार्य भी मिल रहे हैं।

भारतेंदु हरिश्चंद्र के अनुसार मातृभाषा की तरक्की से ही राष्ट्र की उन्नति एवं प्रसिद्धि संभव है;;;;। भारत को आजाद करने के लिए स्वतंत्रता संग्राम के समय कवियों ने हिंदी में ओजपूर्ण कविताओं का गान किया। देशभक्ति से परिपूर्ण कविताएं लिखी गई और उनसे देशवासियों में आजादी की भावना की अलख जगाई गई। हमारे स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों पर उन गीतों का भी बहुत अधिक प्रभाव पड़ा और उसका असर आजादी के समय के आंदोलन में देखने को भी मिला।पूरे देश के कवियों नेअपनी वाणी को जन-जन में पहुंचाने के लिए हिंदी का ही सहारा लिया।

आज हम सब मिलकर जन-जन में हिंदी की अलख जगाने की कोशिश कर रहे हैं, ताकि हिंदी हमारी राजभाषा से राष्ट्रभाषा बन सके।

अंत में उपसंहार यही है कि वर्तमान परिस्थितियों में भारत को प्रगतिशील देश बनाने में हिंदी का ही बहुत अधिक योगदान है। हिंदी भाषा के कारण ही आज विश्व जगत में भारत का एक विशेष स्थान है भारत का एक सबसे बड़ा हिस्सा हिंदी बोलता है और इसलिए हिंदी को राष्ट्रभाषा बनना ही चाहिए।

- साधना छिरोल्या

लेखक परिचय

नाम – साधना छिरोल्या
दमोह(मध्य प्रदेश)

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ.....**साधना छिरोल्या**.....जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित "**एक लेख प्रतियोगिता**" में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों को** प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।

उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिंदी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना
समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन एवं संस्था
डॉ. प्रीति समकित सुराना

शब्द से संवेदन तक... लेखन से परिवर्तन तक...